परास्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य
(जुलाई, 2026 तथा जनवरी, 2027 सत्रों के लिए)

MSK-003 दर्शनः न्याय, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली—110068

परास्नातक कार्यक्रम
सत्रीय कार्य (2026—27)

पाठ्यक्रम कोड : MSK–003/2026–27

प्रिय छात्र/छात्राओं

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :— सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : ———————————

नाम : ——————————————

पता : ——————————————

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ———————————

सत्रीय कार्य कोड : ——————————————

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : ——————————

दिनांक : ———————————

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए, और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति :** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजि,।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई, 2026 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2027

जनवरी, 2027 सत्र के लिए : 30 सितंबर, 2027

सत्रीय कार्य

MSK–003 दर्शनः न्याय, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

पाठ्यक्रम कोड –MSK: 003
पाठ्यक्रम शीर्षक – दर्शनः न्याय, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा
सत्रीय कार्य – MSK –003/TMA/2026–2027

पूर्णांक – 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. **अधोलिखित की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :** 15X3= 45

(क) दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघातके हेतौ।
दृष्टे साऽपार्था चेन्नैकान्तात्यन्तोऽभावात् ।।

अथवा

प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टं त्रिविधमनुमानमाख्यातम् ।
तल्लिंगलिंगिपूर्वकमाप्तश्रुतिराप्तवचनं तु।।

(ख) विषयश्चाधिकारी च सम्बन्धश्च प्रयोजनम् ।
अनुबन्ध विना ग्रन्थे मङ्गलं नैव शस्यते।।

अथवा

श्सामानाधिकरण्यञ्च विशेषणविशेष्यता।
लक्ष्यलक्षणसम्बन्धः पदार्थप्रत्यगात्मनाम् ।।

(ग) रङ्गस्य दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा नृत्यात् ।
पुरुषस्य तथाऽत्मानं प्रकाश्य विनिवर्तते प्रकृतिः ।।

अथवा

यन्नदुःखेन समभिन्नं न च ग्रन्थमनन्तरम्।

अभिलाषोपनीतं च तत्सुखं स्वः पदास्पदम्।।

निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 7X5= 35

2. गुणत्रय का निरूपण कीजिए।
3. पुरुष बहुत्व को सिद्ध कीजिए।

4. भारतीय दर्शन परंपरा में अन्नम्भट्ट के योगदान को रेखांकित कीजिए। ।
5. 'आप्तवाक्यं शब्दः' इस कारिका भाग का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
6. सांख्य के अनुसार सृष्टि कितने प्रकार की होती हैं।
7. नासतो विद्यते भावो नाऽभावो विद्यते सतःय इस उक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए तथा कार्यउत्पत्ति की पांच युक्तियों की चर्चा कीजिए।
8. दुःख कितने प्रकार के होते हैं सांख्यकारिक के अनुसार स्पष्ट कीजिए।

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए। 10X2= 20

9. सत्कार्यवाद की पांच युक्तियों पर चर्चा करते हुए मूल प्रकृतियों का वर्णन करें।
10. आस्तिक दर्शन मुख्य रूप से कितने प्रकार हैं विस्तारपूर्वक वर्ण करें।
11. भारतीय दर्शन के अनुसार वर्णित अनुबंधचतुष्टय की विस्तृत विवेचना कीजिए।